11वीं अंतर्राष्ट्रीय वन मेला में मध्यप्रदेश राज्य वन अनुसंधान संस्थान द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन, दिनांक 17–23 दिसम्बर 2025

मध्यप्रदेश वन विभाग के अंतर्गत लघु वनोपज संघ, भोपाल द्वारा आयोजित 11वीं अंतर्राष्ट्रीय वन मेला में मध्यप्रदेश राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर को लाख प्रशंसकरण एवं अनुसंधान गतिविधियॉ पर उत्कृष्ट कार्य के प्रदर्शन हेतु अवार्ड प्रदान किया गया है। दिनांक 23 दिसंबर 2025 को मेले की अंतिम दिवस में भव्य समापन समारोह का आयोजन किया गया था, जिसमें प्रधान अतिथि के रूप में मध्यप्रदेश शासन के डॉ. विजय शाह, कैबिनेट मंत्री एवं श्री दिलीप सिंह अहिरवार, वन राज्य मंत्री उपस्थित रहे साथ में मध्य प्रदेश वन विभाग की सभी वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित होकर सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत किये गये। संस्थान की तरफ से उक्त अवार्ड लेने हेतु लाख परियोजना के मुख्य परियोजना अन्वेषक एवं वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार, के साथ श्री बलराम लोधी, श्री विजय हल्दकार एवं सिवनी जिले के अंतर्गत बरघाट में लाख पर कार्य करने वाले महिला शिल्पकार भी उपस्थित रहे। इस बार मेले में संस्थान का मुख्य उद्देश्य रहा लाख प्रशंसकरण के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को आर्थिक व सामाजिक बढावा देना था। संस्थान द्वारा लाख के ऊपर कृषि पद्धति को बढावा देना एवं प्रायोगकि प्रदर्शन पर वन मेला में स्टॉल सभी आगंतुकों का मुख्य आकर्षण का केंद्र बिंदु रहा। उक्त स्टॉल में लाख के साथ–साथ संस्थान की विभिन्न गतिविधियॉ के बारे में भी आगतुंको को अवगत कराया गया था।

अंतर्राष्ट्रीय वन मेला दिनांक 17 दिसम्बर से 23 दिसम्बर 2025 तक रहा, जिसमें मेले का उद्घाटन दिनांक 17/12/2025 को माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, मध्यप्रदेश शासन के कर कमलो द्वारा किया गया था। मध्यप्रदेश राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के तरफ से वन मेला के सफल आयोजन हेतु संचालक श्री प्रदीप वासुदेवा के निर्देशन में डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार, श्री विजय हल्दकार, श्री बलराम लोधी, श्री सूरज सिंह रघुवंशी, श्री के.एल. वर्मा एवं श्री भारत सिंह आर्मो उपस्थित रहे।

अजब गजब | **आइसीएआर ने पायलट प्रोजेक्ट के तहत मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र व छत्तीसगढ़ को चुना**

तीन राज्यों के लोग 'लाख' से बनेंगे लखपति, रोजगार से जोड़ेंगे

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

भोपाल. मध्यप्रदेश इन दिनों महिलाओं, मजदूरों, किसानों और युवाओं को लखपति बनाने के साथ जंगल बचाने के एक अहम प्रोजेक्ट का नेतृत्व कर रहा है। यह प्राकृतिक लाख के उत्पादन से जुड़ा है, जो कि पलाश, बेर, कुसुम और सेमिलता के पौधों से प्राप्त की जाती है। चूंकि विकास और अवैध कटाई के कारण इन पौधों की संख्या पहले से कम हो रही है, इसलिए अब इन्हें विशेष तौर पर रोपकर इनसे लाख का उत्पादन लेने की कवायद की जा रही है। इसके उत्पादन पर प्रति एकड़ 75 हजार से लेकर 1 लाख का खर्च आता है और कमाई 7 साल तक 6 से 8 लाख होती है। आइसीएआर नई दिल्ली और राष्ट्रीय कृषि प्रसंस्करण संस्थान रांची ने मध्य भारत को प्राकृतिक लाख के उत्पादन के लिए चुना है। इसमें तीन राज्य मप्र, महाराष्ट्र और छग आते हैं। जिनमें लाख के उत्पादन के लिए पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया है।

प्रोजेक्ट देख रही टीम ने भोपाल में आयोजित वन मेले में 1500 से अधिक लोगों को लाख की खेती के लिए प्रोत्साहित किया।

400 लोगों को जोड़ चुके

प्रोजेक्ट के प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार के मुताबिक तीनों राज्यों में टीमें भ्रमण कर रही है, मप्रदेश में अब तक 1200 और महाराष्ट्र में 400 लोगों को लाख के उत्पादन से जोड़ चुके हैं। हजारों लाखों को प्रशिक्षण दिया है।

लाख का कहां कितना उत्पादन

सभी राज्यों को मिलाकर अभी 18 हजार 944 टन लाख का उत्पादन होता है। इसमें 60-65 फीसद विदेशों में निर्यात किया जा रहा है। बाकी का उपयोग अन्य राज्य स्वयं कर रहे। देश के कुल उत्पादन का झारखंड में 54 फीसद, छत्तीसगढ़ में 16 फीसद और मध्य प्रदेश में 13 फीसद उत्पादन हो रहा है। लाख के उत्पादन के लिए कोई भी प्रशिक्षण ले सकते हैं, इसके लिए राज्य वन अनुसंधान जबलपुर से संपर्क किया जा सकता है।

ये भी फायदे

- लाख का उत्पादन धान, गेहूं और सोयाबीन के साथ-साथ मेड़ों पर उक्त पौधे लगाकर किया जा सकता है।
- गांव के लोग कमाई के लिए वन क्षेत्रों में जाते हैं और बाघ, तेंदुए समेत दूसरे वन्यप्राणियों के हमले के कारण जान गंवा देते हैं, यह पेड़ों को लोग स्वयं के खेतों में लगाकर भी लाख का उत्पादन ले सकते हैं।
- वर्तमान में बेरोजगारी बड़ी समस्या है, लाख के उत्पादन को अपनाकर इसे कम किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को रोजगार मिलेगा।

प्रदेश में जबलपुर संभाग लाख की खेती में अव्वल

जबलपुर, देशबन्धु। देशभर में खेती के क्षेत्र में जिस तरह से जबलपुर जिले में मटर की खेती को पहचान मिली है उसी तरह आने वाले दिनों में लाख की खेती भी गेम चेंजिग करा सकता है। प्रदेश में जबलपुर संभाग के सिवनी बरघाट, छिंदवाड़ा ,नैनपुर, मण्डला सहित जबलपुर के पनागर स्थित डोंगरबरेला और सिलुआ ग्राम में जिस तरह से लाख की खेती की जा रही है। उसकी पहचान प्रदेश में तो अव्वल बनी हुई है। आने वाले समय में देशभर में लाख की खेती से भी जबलपुर संभाग की पहचान बन सकती है। इस सम्बंध में राज्य वन अनुसंधान संस्थान के अथक प्रयास सामने आ रहे हैं।

वन अनुसंधान संस्थान में पदस्थ वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अनिरुद्ध मजूमदार ने बताया कि देश में कुल 18944 टन लाख का उत्पादन होता है, जिसमें से 60-65 फीसदी विदेशों में निर्यात किया जा रहा है। वर्तमान में झारखण्ड में सबसे ज्यादा 54 फीसदी,छत्तीसगढ़ में 16 फीसदी और मप्र में 13 फीसदी लाख की खेती का उत्पादन होता है।

किसान दिखा रहे रुचि -हाल के कुछ सालों में जबलपुर के संभाग के किसानों ने गहन रुचि दिखाते हुए उत्पादन के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं जिसमें सिवनी जिले के बरघाट के अलावा जबलपुर जिले के दो केन्द्र पनागर के डोंगर बरेला और ग्राम सिलुआ के किसान इस क्षेत्र में अच्छा काम कर रही है।

चूड़ियों तक सीमित नहीं रहा लाख

लाख न केवल चूड़ियों और मनिहारी सामानों तक सीमित है, बल्कि इसका उपयोग आयुर्वेदिक औषधि (जैसे लाक्षादि), कैप्सूल कोटिंग, सुगंध (एल्युरिटिक एसिड), सौंदर्य प्रसाधन, पॉलिश, पेंट, वार्निश, और फलों की कोटिंग (वैक्स) में भी प्रमुखता से किया जा रहा है।

नई दिल्ली से मिली वितीय सहायता

संभाग में बढ़ रहे उत्पादन के चलते राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली और राष्ट्रीय कृषि प्रसंस्करण संस्थान, रांची द्वारा मध्य भारत (मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़) में तकनीकी विकास हेतु वित्तीय सहायता प्राप्त हुई है। संस्थान ने पिछले कुछ वर्षों में मध्य प्रदेश के 1,200 और महाराष्ट्र के 400 किसानों को प्रशिक्षण दे चुकी है। किसानों की आजीविका में सुधार करना और जंगलों पर उनकी निर्भरता कम कर उन्हें नुकसान से बचाना है।

लाख की खेती से किसान बनेंगे लखपति, वन अनुसंधान संस्थान कर रहा मदद

संस्थान अब कृषि-वानिकी पर जोर दे रहा है, जिससे किसान धान, गेहूं और सोयाबीन के साथ-साथ कुसुम, बेर और पलास के वृक्षों पर भी लाख का उत्पादन कर सके।

वर्तमान आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में रंगीनी लाख (95.34%) की तुलना में कुसमी लाख (4.66%) का उत्पादन काफी कम है। चूंकि कुसमी लाख की बाजार वैल्यू अधिक है, इसलिए राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर द्वारा कुसुम और सेमिलता के पौधों पर लाख उत्पादन बढ़ाने के लिए निरंतर कार्यशालाएं आयोजित की जा रही हैं। राज्य वन अनुसंधान केन्द्र के तहत इस संपूर्ण परियोजना का संचालन प्रदीप वासुदेवा के निर्देशन एवं वैज्ञानिक डॉ.अनिरुद्ध मजूमदार के साथ-साथ विजय हल्दकार, बलराम लोधी, भारत सिंह आर्मो, एसएस रघुवंशी, केएल वर्मा के द्वारा इसे प्रभावी ढंग से क्रियान्वित कर रहे हैं।

www.deshbandhu.co.in | जबलपुर | भोपाल | सागर | सतना | रायपुर | बिलासपुर | नई दिल्ली

25 | बदलते जमाने का अखबार | पीपुल्स समाचार | जबलपुर

लाख उत्पादन बढ़ाने की तकनीक ने दिलाई SFRI को नई पहचान

पीसं,जबलपुर। जबलपुर में संचालित प्रदेश का एक मात्र राज्य वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों की लाख उत्पादन को बढ़ाने और इसके प्रति किसानों को प्रेरित करने के साथ किए गए अन्य कार्यों के लिए उत्कृष्टता पर राजधानी भोपाल में आयोजित अंतरराष्ट्रीय वन मेला में अवार्ड से नवाजा गया। इस अवार्ड ने संस्थान को लाख के विज्ञान आधारित उत्पादन के क्षेत्र में एक नई पहचान दिलाई है।

बताया जाता है कि मध्य प्रदेश वन विभाग के तहत लघु वन उपज संघ द्वारा आयोजित इस मेला में संस्थान को उत्कृष्ट कार्य के लिए समापन समारोह में कैबिनेट मंत्री डॉ. विजय शाह, वन राज्य मंत्री दिलीप सिंह अहिरवार ने संस्थान को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। इस मौके पर संस्थान के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार के साथ बलराम लोधी, विजय हल्दकार और महिला शिल्पकार भी उपस्थित रहे, जिन्होंने लाख उत्पादन में किए गए कार्यों का हिस्सा बनकर इस परियोजना को और भी प्रभावशाली बनाया।

मप्र व महाराष्ट्र के किसानों को दिया गया प्रशिक्षण

राज्य वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार ने बताया कि संस्थान ने विभिन्न ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित कर प्रदेश के 17 जिलों के 1200 कृषकों और महाराष्ट्र के करीब 300 कृषकों को लाख उत्पादन के लिए विज्ञान आधारित प्रशिक्षण दिया है। इस प्रशिक्षण में महिलाओं को विशेष ध्यान दिया जाता है, और उन्हें लाख से बने वैल्यू-एडेड प्रोडक्ट्स जैसे चुड़ियां बनाने की कला सिखाई जाती है।

वन मेले में एसएफआरआइ को मिला उत्कृष्टता अवॉर्ड

पुरस्कार प्राप्त करते अफसर।

जबलपुर. लघु वन उपज संघ की ओर से आयोजित अंतरराष्ट्रीय वन मेले में राज्य वन अनुसंधान संस्थान (एसएफआआइ) को लाख प्रसंस्करण एवं अनुसंधान क्षेत्र में उत्कृष्टता अवॉर्ड मिला है। लाख के वैज्ञानिक, तकनीकी और नवाचार आधारित कार्यों के लिए कैबिनेट मंत्री डॉ. विजय शाह तथा वन राज्य मंत्री दिलीप सिंह अहिरवार ने मंगलवार को भोपाल में संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार को अवॉर्ड दिया। इस दौरान संस्थान के प्रतिनिधि बलराम लोधी, विजय हल्दकार, बरघाट क्षेत्र में लाख उत्पादन एवं प्रसंस्करण से जुड़ी महिला शिल्पकार भी मौजूद रहीं।